SNSRKS,

Scanned with CamScanner

कनिष्क की शासन व्यवस्था

कनिष्क पहला एक महान विजेता था। कनिष्क की शासन व्यवस्था का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त नहीं होता है फिर भी सारनाथ के अभिलेख से उसकी शासन व्यवस्था पर जो प्रकाश पड़ता है उससे ऐसा प्रतीत होता है कि वह एक महान विजेता ही नहीं बल्कि एक महान शासन प्रवच्चक भी था। उसने अपने विशाल साम्राज्य को प्रान्तों में विभक्त करके उनका प्रशासन क्षत्रपों के अधिकार में दिया था और इस प्रकार उसने क्षेत्रीय शासन व्यवस्था को अपनाया था।

कनिष्क के पूर्वी साम्राज्य में बनस्पर क्षत्रप तथा खर-पल्लान महाक्षत्रपों का उल्लेख प्राप्त होता है इसी प्रकार अन्य प्रांतों में भी व्यवस्था थी। कनिष्क बहुत ही उदार तथा प्रजावत्सल सम्राट था। वह अपनी प्रजा को पुत्र के समान मानता था। भारतीय प्रजा के साथ उसका कुषाणों के समान ही व्यवहार था। वह एक ऐसा सम्राट

Scanned with CamScanner

[illegible] [illegible] का [illegible] । [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] को आ गी [illegible]
[illegible] था । [illegible] [illegible] की पूर्ति
[illegible] [illegible] [illegible] था । [illegible]
[illegible] [illegible] के [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] थी । [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] आक्रमणकारी [illegible] था ।
[illegible] [illegible] [illegible] में [illegible]
[illegible] था यह [illegible] [illegible] कि
[illegible] सैनिक [illegible] [illegible] सिद्धांत
पर आधारित नहीं था । जिसके कारण
[illegible] की शक्ति [illegible] और [illegible]
सैनिक की शक्ति भी [illegible] हो

[illegible] का [illegible] :-

[illegible] आरंभ में [illegible] धर्म को मानने वाला था। [illegible] अशोक की ही भांति पहले [illegible] निर्दयी शासन था। मगध [illegible] आक्रमण के समय हुए बौद्ध [illegible] अनुभव प्राप्त हुआ। जिसके सम्पर्क में आकर वह बौद्ध धर्म से इतना प्रभावित हुआ कि उसने

Scanned with CamScanner

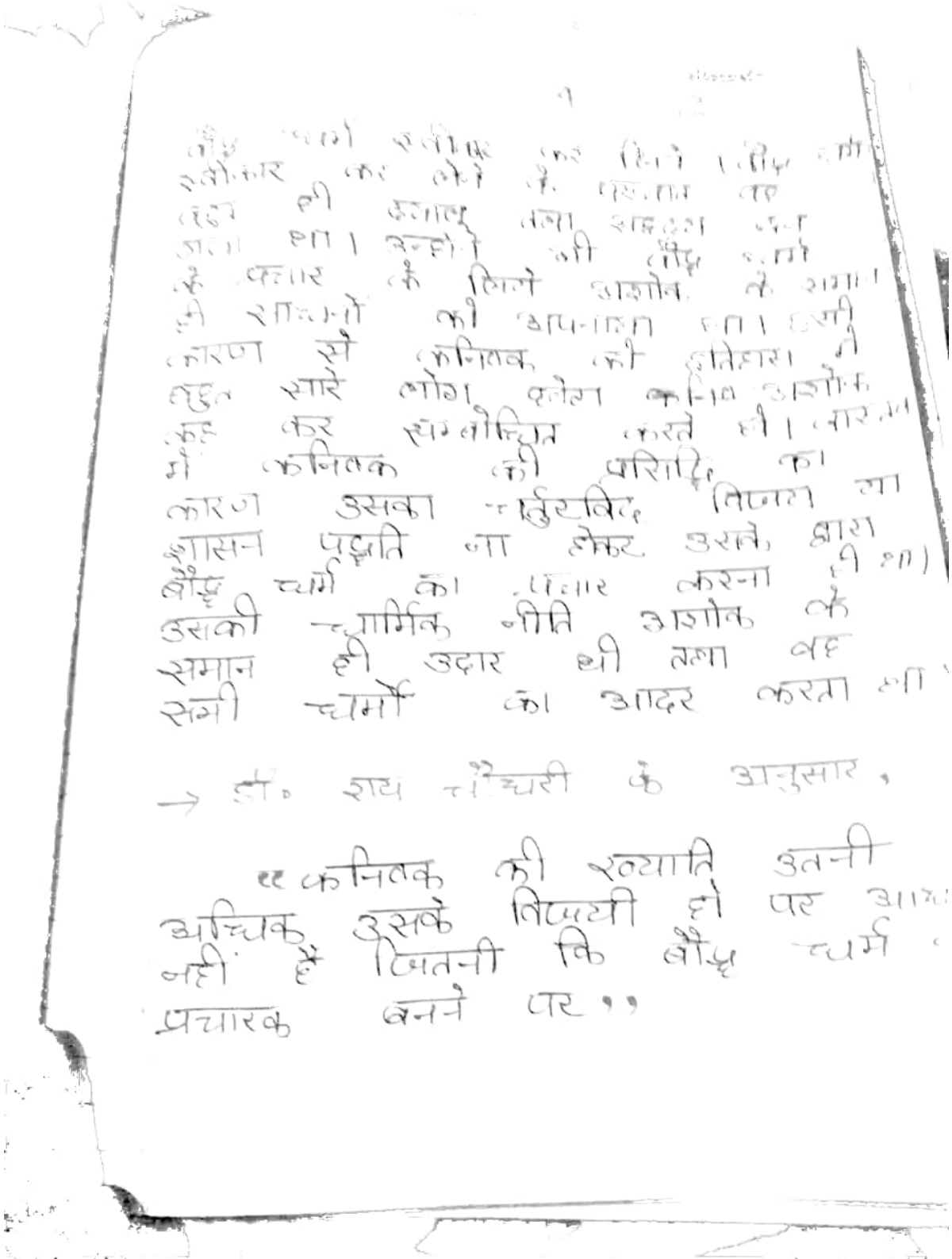

बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिये (बौद्ध धर्म) स्वीकार कर लेने के पश्चात वह बहुत ही कृपालु तथा सहृदय बन गया था। उन्होंने भी बौद्ध धर्म के प्रचार के लिये अशोक के समान ही साधनों को अपनाया था। इसी कारण से कनिष्क को इतिहास में बहुत सारे लोग दूसरा अशोक कह कर सम्बोधित करते हैं। वास्तव में कनिष्क की प्रसिद्धि का कारण उसका चतुर्दिक विजय या शासन पद्धति ना होकर उसके द्वारा बौद्ध धर्म का प्रचार करना ही था। उसकी धार्मिक नीति अशोक के समान ही उदार थी तथा वह सभी धर्मों का आदर करता था।

→ डॉ० राय चौधरी के अनुसार,

"कनिष्क की ख्याति इतनी अधिक उसके विजयों पर आधारित नहीं है जितनी कि बौद्ध धर्म के प्रचारक बनने पर"

अभिलेखों तथा सिक्कों से ऐसा आभास होता है कि वह अपने अन्तिम काल में बौद्ध हो गया था। उसने बौद्ध धर्म के प्रचार तथा उसके प्रति श्रद्धा प्रदर्शित करने के लिये उन्होंने बहुत सारे मठों का निर्माण करवाया।

निष्कर्ष:

उपरोक्त तथ्यों के आकलन यह स्पष्ट होता है कि कनिष्क की धार्मिक नीति बड़ी ही उदार थी। उसमें उच्चकोटि की धार्मिक साहिष्णुता थी। उसने बौद्ध धर्म को स्वीकार करके उसे राज धर्म घोषित कर दिया था। फिर भी कनिष्क अन्य धर्मों का भी आदर करता था। उनकी मुद्राओं पर शिव, सूर्य, अग्नि तथा बुद्ध की मुर्तियां बनी हुई पायी गई। अर्थात् कनिष्क बहुत ही धार्मिक विचार का व्यक्ति था।

Scanned with CamScanner